पेरिस
१० ङ्गरवरी, २००६

संदेश संख्या – ८६

# पवित्र ईशा मसीह

ईशा–मसीह योग–प्रक्रिया का नाम है और यह योग प्रक्रिया है निर्मन का (न कि विचारों का), सत्य का (न कि धर्मशास्त्रों का), परमानन्द का (न कि विश्वास पद्धतियों का) अच्छाई के मूलस्रोत का (न कि ईश्वर पुत्र का), अद्वैत–चेतना का (न कि द्वैत की अज्ञानता का), सत्यनिष्ठा की अन्तर्दृष्टि का (न कि कौमार्य एवं पवित्रता की व्याख्या का) ।

१. क्रॉस अर्थात् सूली योग का प्रतीक है इसमें आकार में बड़ी खड़ी रेखा, अंग्रेजी अक्षर मखफ यानी 'मैं' का प्रतीक है, जिसे छोटी क्षैतिज रेखा काटती है। यह 'मैं' खण्डित चेतना के विभिन्न अवयवों के क्षेत्र से ही प्रक्षेपित होता है और इस तरह यह 'मैं' उसी क्षेत्र का एक और खण्डित अंग बन जाता है । किन्तु अत्यधिक अनुकूलन (Conditioning) के कारण इस खण्डित भाग को एक सत्ता सौंप दी जाती है ताकि यह अन्य अवयवों को प्रभावित कर सके और इस प्रकार चेतना का यह 'मैं' रूपी अंश स्वयं को 'स्वतंत्र', 'अलग सत्तावाला' एवं अन्य अंशों के क्षेत्र से बाहर का मानने लगता है । और यही मानवीय संबंधों के प्रत्येक स्तर पर भ्रांति एवं द्वन्द्व उत्पन्न करता है और फिर चेतना में स्थित इस ''मैं'' और इससे भिन्न अवयवों के बीच विभाजन को कायम रखने और उसे दृढ़ता प्रदान करने में ही जीवन की जीवन्तता समाप्त हो जाती है । इस सदियों पुरानी भयंकर अनुकूलन की समझ होते ही द्वन्द्व से मुक्ति की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। यही योग की मूलभूत समझदारी है । बाजार में योग को फ्रेन्चाइजी एवं अन्य कई तरह से बेचा जा रहा है । यह सब योग नहीं बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य–लाभ का कार्यक्रम मात्र है । इस तरह क्रूस यानी कि सूली समझदारी का प्रतीक है जिसका उदय मखफ अर्थात् 'मैं' रूपी भ्रांति के मिटने से ही होता है।

२. मछली : मछली ईसाईयत का प्रथम प्रतीक है । योग के संदेश को मछली की प्रतीकात्मक लम्बी कहानी के माध्यम से समझाया गया है । शिवेन्दु द्वारा रिट्रीट में इसे कहा जाता है ।

३. यीशु बताते हैं–''आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत (ओल्ड टेस्टामेंट) का सिद्धान्त'' तो समस्त मानव जाति को दृष्टिहीन और दन्तहीन बना देगा ।''
कोई प्रतिक्रिया नहीं, कोई प्रतिशोध नहीं अपितु पर्याप्त अनुक्रिया ही योग का संदेश है ।

४. यीशु का उद्‌गार है–''मृत, मृत को दफन कर दे।''
मन जीवन का शत्रु है । यह जीवन के आनन्द को समाप्त कर देता है और वासना में फँस जाता है और इसी कारण महत्वाकांक्षा (लालच), चिन्ता (भय), मान्यता (निर्भरता) और असमानता (द्वन्द्व) का जन्म होता है। मन के अंधकार एवं स्वप्न से जग जाना ही मन के जीवन विरोधी आयाम को समाप्त कर देना है, दफन कर देना है । मन अर्थात् विभेदकारी चित्तवृत्ति की गलाघोंटू पकड़ से जीवन यानी शरीर की मुक्ति संबंधी योग का ज्ञान वस्तुतः यही है ।

५. ''जो तुम्हारे पास है, वही तुम्हारा उद्धार करेगा यदि तुमने उसे अपनी अन्तर्दृष्टि से जाना है।''–यीशु
यह भी योग का ही संदेश है। यह बहिर्मुखी अवधारणाओं से अन्तर्मुखी अन्तर्दृष्टि की यात्रा को बताता है। 'उद्धारक' की अवधारणा पुरोहित–वर्ग की धार्मिक ठगीमात्र है और इस ठगी द्वारा शोषण का मूल कारण है मानवीय–चेतना का एक मूलभूत अवयव ''मानसिक–निर्भरता''।

६. ''मेरा मांस खाओ और मेरा रक्त पीओ ।''– यीशु

सत्य को प्रत्येक शरीर में घटित होना होगा, उसके मांस तथा रक्त में प्रस्फुटित होना होगा । यह योग का ही संदेश है । इसीलिए यीशु कहते हैं–''मेरे जैसा हो किन्तु मेरा अनुसरण मत करो । सत्य को अपने लिए स्वयं खोजो । वस्तुतः यीशु ईसाई नहीं थे । उनके अनुयायी ईसाई हैं । ये अनुयायी मन्त्र की तरह दोहराते हैं–''अपने पड़ोसी को प्यार करो'' किन्तु पृथ्वी पर सर्वत्र हत्या करते रहते हैं । बाद में, वे चर्च में शराब के साथ पावरोटी खाकर 'सामूहिक–पवित्रता'' नामक कर्मकाण्ड में भाग लेते हैं और इस तरह आत्मदीनता एवं अपराधबोधग्रस्तता का प्रसार करते हैं।

७. ''निष्कष मत निकालो''–यीशु

''जो है''–को देखने की प्रज्ञा तथा ''ऐसा होना चाहिए'' की चाहत में ऊर्जा की बर्बादी रोकने के लिए यह जबर्दस्त आह्वान है । निष्कष नहीं निकालना, किसी के बारे में कोई छवि नहीं बनाना, किसी उद्देश्य से प्रेरित होकर कार्य नहीं करना, मताग्रही नहीं होना–ये सब पूर्ण जागृति अर्थात् सचेतनता यानी कि 'योग' की ही अवस्था है ।

८. क्रॉस पर यीशु मृत नहीं थे अपितु योग की श्वासरहित प्राणायाम की अवस्था में थे । इसी कारण, उनके शरीर में जब तीर मारा गया तो खून निकल पड़ा । मृत शरीर से खून नहीं निकलता।

९. ''जब तुम्हारा एक नेत्र होगा तब तुम्हारा पूरा शरीर प्रकाश से भर जाएगा ।'' – मैथ्यु ६:२२

यह योग की कूटस्थ प्रक्रिया है । शरीर की आँखें मन ही हैं । यह तीसरा नेत्र निर्मन है अर्थात् जीवन है जो प्रकाशपूर्ण है जबकि मन अन्धकारपूर्ण।

१०. ''वह व्यक्ति पहला पत्थर मारे जिसने पाप नहीं किया है ।''–यीशु

यह योग के स्वाध्याय प्रक्रिया के प्रति अत्यन्त गहरा आमन्त्रण है ।

पवित्र यीशु का होना वस्तुतः एक प्राच्य–घटना है । इसे पाश्चात्य भाषा में ठीक से नहीं समझा गया है। वे एक योगी थे । वे पोप की हाँ में हाँ मिलाने वाले नहीं हैं । अतः पोप उन्हें किसी दिन विधर्मी भी घोषित कर सकता है।

बैप्टीज्म व्याप्ति–स्मृति है ।

यीशु बाबा जी की जय ।